SUSHANT UNIVERSITY ORGANIZED INTERNATIONAL CONFERENCE ON
"ADVANCES IN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND INNVOATION" ICAMRI-2023
ON 28-29TH OCTOBER 2023
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

प्रवासी हिंदी साहित्य में मानवीय संवेदना

लक्ष्मी देवी, शोधार्थी, पीएच.डी. हिन्दी, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राजस्थान)

शोध सार

"प्रवास' शब्द का अर्थ है, विदेश जाना, देशान्तरवास, विदेश यात्रा या घर से बाहर रहना। दूसरे देश या विदेश में रहने वाला व्यक्ति प्रवासी होता है। हर साल, हजारों–लाखों भारतीय बेहतर अवसरों की तलाश और उम्मीद में प्रवास करते हैं। इन प्रवासी भारतीयों में रचनात्मकता से जुड़े कुछ ऐसे साहित्यकार भी हैं जिन्होंने विदेशों में कार्य करते हुए भी अपने देश की मित्रता, संस्कृति और सभ्यता को सहेज कर रखा है। ये रचनाकार निरन्तर अपनी साहित्यिक साधना से विदेशों में अपने साहित्यिक कौशल को सिद्ध करते हैं। वास्तव में साहित्य सृजन चाहे देश में हो या विदेश में, उत्कृष्ट साहित्य वह है जिसमें मानवीय संबंधों की गर्माहट रहती है। जहां तक प्रवासी साहित्य में क्षितिज के विस्तार की बात है तो यह कहना गलत नहीं होगा कि प्रवासी साहित्य में न केवल सुखद और दुखद जीवन के अनुभवों की महक जीवित है, बल्कि त्याग, दया, स्नेह, कोमलता जैसे सद्गुणों का संचय भी है। मानवीय संबंधों के अलावा, प्रवासी साहित्य घुटन, घबराहट, संघर्षों, लाचारी और विदेशी वातावरण के कारण होने वाली आंतरिक पीड़ा की भावनाओं के साथ–साथ उनकी दैनिक समस्याओं को भी कुशलता से व्यक्त करता है।

मूल शब्दः– प्रवासी, साहित्य, संस्कृति, सभ्यता, विदेशी वातावरण।

प्रस्तावना

प्रवासी साहित्यकारों ने प्रचुर मात्रा में हिंदी कहानियों एवं उपन्यासों को लिखा है। इस साहित्य के मूल में मानवीय संवेदनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। मानवीय संवेदना से तात्पर्य उस चिंता से है जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है। इसमें मानव समाज के हित के साथ–साथ समस्त जीवों का हित शामिल होता है। जिस साहित्य में अनुभूतियां विद्यमान है वहीं मानवीय संवेदनाएं उद्घाटित होंगी। प्रवासी साहित्य में मानवीय संवेदना, स्त्री विषयक दृष्टिकोण, अस्तित्त्व निर्माण के लिए संघर्षरत भारतीयों की मूल वेदनाओं को देखा जा सकता है। दूसरे देशों में रहने वाले भारतीय मूल के रचनाकार ही प्रवासी साहित्यकार कहलाते हैं। वे प्रवास के दौरान मुख्यतः भारत में रहने वाले साहित्य प्रेमियों के लिए साहित्य सृजन का कार्य भी करते हैं। वे एक अलग देश में रहने के अपने अनुभवों और अपनी पृष्ठभूमि के बारे में लिखते हैं। प्रवासी साहित्य हमारे चारों ओर है और विदेशी लेखकों ने हिन्दी में कहानियाँ तक लिखी हैं। आज दुनिया के कई अलग–अलग हिस्सों में भारतीय रह रहे हैं। कई साल पहले, भारत के लोग काम और बेहतर जीवन की तलाश में विदेश जाते थे। वे विभिन्न देशों में बस गए और अपनी अनूठी संस्कृति विकसित की। प्रवासी साहित्य इस बारे में बात करता है कि लोग अपने नए समाज में कैसे फिट होते हैं। साहित्य में स्थानीयता के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति और समाज के अंतर संबंधों को व्याख्यात किया गया। आज भी ब्रिटेन, अमेरिका, मॉरीशस, फिजी, वेस्ट इंडीज़, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम, खाड़ी देश, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलेंड आदि देशों में बड़ी संख्या में भारतीय रहते हैं। वे विभिन्न भारतीय भाषाएँ बोलते हैं और अपनी मातृभाषा में साहित्य भी लिखते हैं। प्रवासी साहित्य इस बारे में भी बात करता है कि लोग कैसा महसूस करते हैं और वे दूसरों से कैसे संबंधित हैं। प्रवासी साहित्य में मानवीय संवेदना से जुड़े पहलुओं का वर्णन इस प्रकार है–

➲ स्त्री यथार्थ का चित्रण–

प्रवासी हिंदी साहित्य में स्त्री को केंद्र में रखा गया है। प्रवासी साहित्य की एक अन्य विशेषता महिला कहानीकारों की बहुलता एवं प्रधानता है। भारत की तरह, अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा जैसे देशों में हिंदी कथा साहित्य के निर्माण में महिलाओं का लेखन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अमेरिका में रहने वाली हिन्दी की जानी–मानी कथाकार उषा प्रियंवदा ने अपने उपन्यास 'नदी' में भारतीय पुरुषों द्वारा अपनी विवाहित पत्नियों के साथ अमेरिकी परिवेश में किए गए छलावे और असंतोष को अत्यंत यथार्थपरक ढंग से चित्रित किया है। इस उपन्यास में पत्नी द्वारा मानसिक रूप से विक्षिप्त बच्चे को जन्म देने के अपराध में उसका पति अमेरिका में उसे बेसहारा छोड़ देता है और अपनी सारी संपत्ति लेकर भारत लौट आता है। उसकी पत्नी लाचार बनी दर–बदर की ठोकरें खाने को विवश हो जाती है। अंत में वह

दूसरे आदमी के सामने आत्मसमर्पण कर देती है और भारत आने के लिए प्रयासरत रहते हुए संसाधन जुटाती है। भारत में आने के बाद उसे अपने ससुराल वालों से यह बात पता चलती है कि उसके पति ने दूसरा घर बसा लिया है।[1] हालांकि ससुराल वाले उसे अब भी अपने घर की बहु मानते हैं, किन्तु वह संबंधों की वास्तविकता को देखने के बाद वापस अमेरिका आ जाती है। यहां अनेक पुरुष उसका साथ देते हैं किन्तु बिना कीमत चुकाए उसे कहीं भी सहारा नहीं मिलता। आखिरकार संघर्षों में पिसती हुई वह मानवीय समाज से दूर रहकर एकांत में अपने शेष जीवन को मजबूर हो जाती है।

इसी प्रकार सुषम वेदी के प्रसिद्ध उपन्यास 'लौटना' में भी स्त्री जीवन के कटु यथार्थ को दिखाया गया है। उपन्यास की नायिका मीरां अपने परिवेश से कटकर प्रवासी जीवन व्यतीत करते हुए अपनी अस्मिता निर्माण के लिए संघर्षरत रहती है। लेखिका ने मीरां के माध्यम से पुरूष वर्चस्ववादी समाज के विरुद्ध स्त्री प्रतिरोध को चित्रित किया है।

➲ **मानवीय संघर्षों की अभिव्यक्ति–**

प्रवासी साहित्य में मानवीय संघर्षों की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। लंदन में स्थित हिन्दी कथाकार उषाराजे सक्सेना ने **'बीमा बिस्माट'** कहानी में मानवीय संघर्षों का चित्रण किया है। इसमें एक शिक्षिका की कथा कही गई है जो अपनी कड़ी मेहनत से एक अर्ध विक्षिप्त बच्चे का मनोवैज्ञानिक इलाज करके उसे ब्रिटेन का सक्षम नागरिक बनाती है। इस प्रकार, प्रवासी साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से पाठकों के सामने महिलाओं की अद्वितीय शक्ति, विपरीत परिस्थितियों में असंभव और कठिन चुनौतियों का सामना करने, सबसे जटिल समस्याओं का समाधान खोजने और लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता को साकार रूप में प्रस्तुत किया है। डॉ. इला प्रसाद की कविताओं मानवीय संघर्ष की अभिव्यक्ति बखूबी देखने को मिलती हैं। वे कहती हैं कि "लेखन मेरे लिए अन्तः संघर्षों से मुक्ति पाने का माध्यम रहा है। संघर्ष चाहे, आन्तरिक हो या बाह्य, वह एक सतत् प्रक्रिया है।"[2] डॉ. इला प्रसाद ने अपनी कविता में लिखा है,

"अंधेरे और उदासी की बात करना
मुझे अच्छा नहीं लगता
निराशा और पराजय का साथ करना
मुझे अच्छा नहीं लगता,
इसलिए यात्रा में हूँ
अंधेरे में उजाला भरने
और पराजय को जय में बदलने के लिए
चल रही हूँ लगातार..... ।"[3]

➲ **देश के प्रति मोह एवं लगाव का चित्रण–**

प्रवासी साहित्यकारों ने अपने देश की पावन मिट्टी, उसकी स्मृति का अत्यंत भावुकता पूर्ण चित्रण किया है। देशप्रेम उनके साहित्य का एक जरूरी फलक रहा है । इस फलक और दायरे को एक नया आयाम देने वालों में सुषम बेदी सफल रही हैं। प्रवासी साहित्य की यह अनोखी खासियत रही है कि इसमें साहित्यकार अपने देश से दूर रहकर भी अपने देश की स्मृतियों को मस्तिष्क में संजोते हुए विदेश में किए गये संघर्षों और जीवनानुभव को अपने साहित्य में अभिव्यक्त करता है। अपने देश को छोड़कर परदेश में जाना कितना कठिन होता है इसका उल्लेख अंजना संधीर ने भी अपनी रचनाओं में किया है।

"निकले गुलशन से तो गुलशन को बहुत याद किया,
धूप को छाँव को आंगन को बहुत याद किया।
ज़िक्र छेड़ा कभी सखियों ने जो झूलों का यहाँ,
मैंने परदेश में सावन को बहुत याद किया।
जिसके साये में मुझे चैन से आती थी नींद
मैंने मां तेरे दामन को बहुत याद किया।"[4]

➲ **असंतुष्ट दाम्पत्य जीवन का चित्रण–**

स्त्री–पुरुष संबंधों और वैवाहिक संबंधों की अस्पष्टता पश्चिमी सामाजिक परिवेश का एक बहुचर्चित विषय है। प्रवासी रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में विदेशी भूमि पर महिलाओं की पारिवारिक समस्याओं एवं अतृप्त वैवाहिक जीवन के प्रसंगों को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। अमेरिकी प्रवासी रचनाकार सुदर्शन प्रियदर्शिनी ने अपनी कहानी 'धूप' में असफल दाम्पत्य जीवन को दिखाया है। एक भारतीय स्त्री उस समय हताश एवं निराश हो जाती है जब वह शादी के बाद अपने पति को स्वार्थी एवं आत्मकेंद्रित अमेरिकी स्वरूप में ढलते हुए देखती है। उसके सुखी और आनंदमय वैवाहिक जीवन के सारे सपने चकनाचूर हो जाते हैं। तो उसे निराशा होती है। सुखी और आनंदमय वैवाहिक जीवन के उसके सपने बिखर जाते हैं। वह अपने मन के अंतर्द्वंद्व से जूझती हुई, संघर्ष करती हुई अपनी समझदारी से अस्त–व्यस्त हुए वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाने में प्रयासरत रहती है। यहां लेखिका ने असंतुष्ट दांपत्य जीवन की वास्तविकता को दर्शाने के साथ–साथ कथा–नायिका मन में निहित अंतर्द्वंद्व को बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

➲ **मानवीय मूल्यों में टकराहट का चित्रण–**

विदेशी समाज में विदेशी सभ्यता के सांस्कृतिक मानदंडों में रहना, भारत के आचार–विचार और रीति–रिवाजों में पलना–बढ़ना और विदेश में बसने व काम करने के बाद विदेशी नीतियों और नियमों से टकराव होना स्वाभाविक है। इन परिस्थितियों से बाहर निकलना और जीवन में सामंजस्य एवं संतुलन बनाकर उसे आनंदमय बनाना एक गंभीर चुनौती है। हालांकि देश से दूर रहते हुए भी, उनका लेखन भारत की राजनीतिक परिदृश्य और सामाजिक गतिविधियों को प्रभावी ढंग से प्रतिबिंबित करता है। विदेशों में लिखे गए हिंदी कथा एवं उपन्यास साहित्य कई मायनों में अलग हैं। इनमें देशी तत्वों की प्रधानता है, लेकिन मानवीय भावनाएँ देश और काल की सीमाओं से परे हैं। यही कारण है कि प्रवासी साहित्य में प्रेम, राग, वैराग्य और अन्य भावनाओं की अभिव्यक्ति सामान्य भारतीय साहित्य की तरह ही हैं। कुछ विदेशी लेखक विदेशी सभ्यताओं और संस्कृतियों का मूल्यांकन भारतीय मानकों के आधार पर करते हैं, इसलिए वे कभी हताश होते हैं तो कभी उत्साहित। अतः मानवीय मूल्यों की टकराहट प्रवासी साहित्य में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

निष्कर्ष–

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रवासी साहित्य में विभिन्न प्रकार की स्त्री विषयक समस्याओं, मानवीय संवेदनाओं, कष्ट, पीड़ा एवं संघर्षों की जीवंत अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। प्रवासी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में भारतीय संस्कृति, पारिवारिक जीवन, सामाजिक परिवेश, नारी की मनोदशा, मानवीय मूल्यों से संबंधित हरेक पहलू को उजागर किया है। इसके साथ ही, प्रवासी हिन्दी साहित्य धीरे–धीरे अपनी छाप छोड़ने में सफल हो रहा है। आज वैश्विक स्तर पर अनेक साहित्यकार इस ओर सक्रिय हैं।[5] सही मायनों में ये साहित्य विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रचार–प्रसार करने के साथ–साथ हिन्दी साहित्य की गरिमा को बढ़ाने में भी अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]डॉ. एम. वेंकटेश्वर, प्रवासी कथा साहित्य में स्त्री जीवन की अंतर कथा, अप्रैल–2019
[2]डॉ. लक्ष्मी गुप्ता, चिंतन के विभिन्न आयाम, पृ. 17
[3]वही पृ. 17
[4] वही पृ. 16
[5] विकल सिंह, प्रवासी स्त्री का अंतर्द्वंद्व और अस्मिता का संघर्ष, पृ. 1